

॥ हनुमान् चालीसा ॥

श्रीगुरु चरन सरोज रज
निज मनु मुकुर सुधार।
बरनऊँ रघुवर विमल यश
जो दायकु फल चार॥

बुद्धिहीन तनु जानिके
सुमिरौँ पवनकुमार।
बल बुद्धि विद्या देहु मोहिं
हरहु कलेस विकार॥

॥ चौपाई ॥

जय हनुमान ज्ञान गुण सागर।
जय कपीश तिहुँ लोक उजागर॥ १ ॥

राम दूत अतुलित बल धामा।
अञ्जनिपुत्र पवनसुत नामा॥ २ ॥

महावीर विक्रम बजरङ्गी।
कुमति निवार सुमति के सङ्गी॥ ३ ॥

कञ्चन बरन विराज सुवेसा।
कानन कुण्डल कुञ्चित केशा॥ ४ ॥

हाथ वज्र औ ध्वजा विराजै।
काँधे मूँज जनेऊ साजै॥ ५ ॥

सङ्कर सुवन केसरीनन्दन।
तेज प्रताप महा जग वन्दन॥ ६ ॥

विद्यावान गुणी अति चातुर।
राम काज करिवे को आतुर॥ ७ ॥

प्रभु चरित्र सुनिवे को रसिया।
राम लखन सीता मन बसिया॥ ८ ॥

राम लक्ष्मण जानकी।
जय बोलो हनुमान् की॥

सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा।
विकट रूप धरि लङ्का जरावा॥ ९ ॥

भीम रूप धरि असुर सँहारे।
रामचन्द्र के काज सँवारे॥ १० ॥

लाय सजीवन लखन जियाये।
श्रीरघुवीर हरषि उर लाये॥ ११ ॥

रघुपति कीन्ही बहुत बडाई।
तुम मम प्रिय भरत सम भाई॥ १२ ॥

सहस वदन तुम्हरो यश गावैं।
अस कहि श्रीपति कण्ठ लगावैं॥ १३ ॥

सनकादिक ब्रह्मादि मुनीशा।
नारद शारद सहित अहीशा॥ १४ ॥

यम कुबेर दिक्पाल जहाँ ते।
कवि कोविद कहि सके कहाँ ते॥ १५ ॥

तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा।
राम मिलाय राज पद दीन्हा॥ १६ ॥

राम लक्ष्मण जानकी।
जय बोलो हनुमान् की॥

तुम्हरो मन्त्र विभीषण माना।
लङ्केश्वर भये सब जग जाना॥ १७ ॥

युग सहस्र योजन पर भानू।
लील्यो ताहि मधुर फल जानू॥ १८ ॥

प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं।
जलधि लाँघि गये अचरज नाहीं ॥ १९ ॥

दुर्गम काज जगत के जेते।
सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ॥ २० ॥

राम दुआरे तुम रखवारे।
होत न आज्ञा बिन पैसारे ॥ २१ ॥

सब सुख लहै तुम्हारी सरना।
तुम रक्षक काहू को डर ना ॥ २२ ॥

आपन तेज सम्हारो आपै।
तीनों लोक हाँक तें काँपै ॥ २३ ॥

भूत पिशाच निकट नहि आवै।
महावीर जब नाम सुनावै ॥ २४ ॥

राम लक्ष्मण जानकी।
जय बोलो हनुमान् की ॥

नाशै रोग हरै सब पीरा।
जपत निरन्तर हनुमत वीरा ॥ २५ ॥

सङ्कट से हनुमान छुडावै।
मन क्रम वचन ध्यान जो लावै ॥ २६ ॥

सब पर राम तपस्वी राजा।
तिन के काज सकल तुम साजा ॥ २७ ॥

और मनोरथ जो कोई लावै।
दासु अमित जीवन फल पावै ॥ २८ ॥

चारों युग प्रताप तुम्हारा।
है प्रसिद्ध जगत उजियारा ॥ २९ ॥

साधु सन्त के तुम रखवारे।
असुर निकन्दन राम दुलारे ॥ ३० ॥

अष्ट सिद्धि नव निधि के दाता।
अस बर दीन जानकी माता ॥ ३१ ॥

राम रसायन तुम्हरे पासा।
सदा रहो रघुपति के दासा ॥ ३२ ॥

राम लक्ष्मण जानकी।
जय बोलो हनुमान् की ॥

तुम्हरे भजन राम को पावै।
जन्म जन्म के दुख बिसरावै ॥ ३३ ॥

अन्त काल रघुपति पुर जाई।
जहाँ जन्मि हरिभक्त कहाई ॥ ३४ ॥

और देवता चित्त न धरई।
हनुमत सेई सर्व सुख करई ॥ ३५ ॥

सङ्कट कटै मिटै सब पीरा।
जो सुमिरै हनुमत बलवीरा ॥ ३६ ॥

जै जै जै हनुमान गोसाईं।
कृपा करहु गुरु देव की नाई ॥ ३७ ॥

यह शत पार पाठ कर कोई।
छूटहि बंदि महा सुख होई ॥ ३८ ॥

यो यह पढ़ै हनुमान् चलीसा।
होय सिद्धि साखी गौरीसा ॥ ३९ ॥

तुलसीदास सदा हरि चेरा।
कीजै नाथ हृदय मँह डेरा ॥ ४० ॥

राम लक्ष्मण जानकी।
जय बोलो हनुमान् की ॥

This stotra can be accessed in multiple scripts at:
http://stotrasamhita.net/wiki/Hanuman_Chalisa.

 generated on **August 16, 2026**

Downloaded from  <http://stotrasamhita.github.io> |  [StotraSamhita](#) | [Credits](#)